काटरक समस्या

स्वस्ति। चि0 शंकर कँ शुभशिष: सन्तु तरामय वृत्तम-

तौँ कतेक बेरि लिखलह जे बाबा अओ, अहाँ एतेक विषय पर पत्र लिखैत छी मुदा आइ काल्हि प्रचलित टाका लए जे वर सभक विवाह भए रहल अछि, ताहि प्रसंग किछु नहि लिखैत छी। हम एहि प्रश्नक उत्तर देबामे जानि बूझि अनठबैत छलहुँ। तकर कारण ई अछि जे हमरा लिखने समाज कनिको प्रभावित होएत तकर तँ संभावना अछिए नहि, तखन अपन कागत, मोसि ओ क्षणक बेरबादी हम किअए करू। एकर अतिरिक्त इहो सम्भावना अछि जे हमरा पर समाजक लोकक कोप भेलासँ बहुत प्रकारक हानि से भए सकैत अछि। हमरा जनैत एहि विषयक चर्चा निर्जन मरुभूमिमे पानि लेल चिकरब जकाँ, आकाशमे लाठी चलाएब जकाँ, पानि पिटनाई जकाँ, बालु पेरि ओहिसँ तेल बाहर करबाक प्रयास जकाँ, घोड़ाका अण्डाक जोगएबाक यत्न जकाँ, गुलरिक फूल तोड़बाक इच्छा जकाँ व्यर्थ होएत-अरण्यरोदन होएत से कहह। ई कतोक बेरि फूल तोरा कहि चुकल छिअहु, मुदा तथापि ताहिलेल बेरिबेर तौँ आग्रह नहि दुराग्रह कएने छह-तँ आइ हम तोहर इच्छाक पूर्तिक प्रयास करैत छी। हमरा अपना जे भावी होएत से बरु होअओ।

शास्त्रमे आठ प्रकार विवाह कहल गेल अछि। ओ आठो प्रकार एना होइछ-(1) ब्राह्म, (2) दैव, (3) आर्ष , (4) प्राजापत्य, (5) आसुर, (6) गान्धर्व, (7) राक्षस, (8) पैशाच। ओहिमे प्रथम चारि प्रकार मात्रक विवाह ब्राह्मणकेँ विहित अछि। एहि मध्य ब्राह्म विवाह भेल जे कन्याक पिता गुणवान वरकेँ स्वयं बजाए हुनका वस्त्रादि दए तथा मधुपर्कादिसँ पूजित कए हुनकर अपना कन्याक संग विवाह करब। यदि यज्ञक पुरोहितकेँ अलंकारादिभूषित कन्या देल जाए तँ से भेल दैव विवाह। एकटा वा दूटा गाए-बड़द वरसँ लए भेल कन्यादानक नाम आर्ष विवाह। ''अहाँ दुनू एक संग रहू'' ई कहि भेल कन्यादानक नाम छल प्राजापत्य। कन्याक सम्बंधी लोकनिकेँ तथा कन्याकेँ भरि पोख द्रव्य दए यदि विवाह कएल गेल तँ से भेल आसुर। वर आ कन्या द्वारा स्वेच्छया कएल विवाह थिक गान्धर्व। मारि-पीटि बलसँ बनैत कन्याक ग्रहण करबाक नाम भेल राक्षस विवाह। सूतलि वा बेहोश भलि कन्याक संग गुप्त संभोग कए ओकरा अपन स्त्री बनाएब भेल पैशाच विवाह।

एहिमे बरकेँ टाका दए हुनका अपन कन्या दए भेल विवाहक कोनोटा व्यवस्था धर्मशास्त्रमे हमरा नहि देखवामे आएल तेँ टाका-तिलक लए भेल विवाहक नाम हालमे राखल गेल अछि तिलकौआ। अतएव से कतएसँ आएल से जानि नहि। बूझि पड़ैछ जे उपयुक्त ब्राह्म विवाहक अर्चा-पूजाक अंगमे लोक कदाचित् टाका असर्फी सोन आदि वरकेँ दैत छलैक। एना देल वस्तुक नाम अर्हणा छल। तकरे दोसर स्वरूप भेल फलदान वा तिलक। तकर अभिप्राय छलैक फलादकि दानसँ वा चानन तिलक आदिसँ वरकेँ पूजित कए हुनका कन्या देल जाइत छल। ई पूजा कन्याक पिताक अपन सामर्थ्य तथा इच्छाक सर्वथा अनुसार होइत छल। जखन वर कन्याक पिताक प्रदत्त पूजा अर्थात हुनक प्रदत्त फलादि वा चन्दनादि स्वीकार कए लैत छलाह, तखन हुनका बजाए हुनक विवाह कन्यासँ कएल जाइत छल।

जे तहिया कन्याकेँ पिता स्वेच्छया दैत छलाह से आब वरक पिता अपन बेटाक विवाहमे बलजोरी असुलए लगलाह। एकर अर्थ दू प्रकारक भेल-एक भेल काटर वरसँ लए कन्यादान करब। एक टा दू टा गाए-बड़दक स्थानमे हाथीक मूल्य कन्याक पिता (भलमानुष लोकनि विशेषतया) लेबए लगलाह एवं एहन टाका लए बेटीक विवाह कएनिहार भलमानुस-पिता बेटिबेच्चा होएबाक कुख्यातिक लाभ कएलहु पर बेटीक विवाहमे टाका गनएबामे कनेको धोखा-धड़ीक अनुभव नहि करथि। हमरा स्मरण अछि जे एक महामहोपाध्याय लब्धोपाधि जनिक घर हमर गामक निकटस्थे एक भलमानुसक गाममे छलनि तथा एक समयमे जे मिथिलाक अत्यधिक प्रतिष्ठित विद्वानक समाज वा उच्च-कुलीन वंशक वरसँ सोलह सए टका काटर लए अपन कन्याक विवाह कएने रहथि। एहि प्रसंग हुनक एक विद्यार्थी जे स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान छलाह, जिज्ञासा कएल-"गुरुजी, कन्याक बिक्री कोना कए रहल छी।" महामहोपाध्यायजीक उत्तर भेटलनि-बड़का-बड़का अर्थात जेहन मधुबनीक नामी एक चीनीक कारखाना मालिक श्रीदीप साहुकेँ छनि तेहन एक जोड़ा बड़दक मूल्य मात्र हम लेल अछि। अर्थात महामहोपाध्यायजी साधारणतया अपना दलान पर अधिकसँ अधिक 125-150 टाका मूल्यक बड़दक कतोक जोड़ा रखैत छलाह। अपन एहि अधम कार्यक समर्थनमे मनुस्मृतिक पाँतिक अर्थ लगाओल। तहिना आइ काल्हि टाका लए विवाह कएनिहार प्रायः प्रत्येक वर अपन काटर कन्यागतसँ असूल कए अपना बेटाक बदलामे स्वयं बलजोरी अर्हणाक ग्रहण कए बेटाक बिक्री करैत छथि।

जेना टाका लए बेटीक विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बेटि-बेच्चा, तहिना टाका लए विवाह कैनिहारक नाम पड़ल बिकौआ। ई बिकौआ लोकनि कन्याक पितासँ काटर लए एकाधिक (हमरा ज्ञानसँ 21 टा धरि) विवाह करैत छलाह। बिकौआक स्त्री वा सन्तानक संभरणक भार नहि। एहन बिकौआसँ विवाहित बेटी कन्यादानी वा 'कनेदानी' प्रायः नैहरहि मध्य रहैत छलीह। अपना पिताक परिवारमे कन्यादानी बेटीक बड़ जूति रहैत छल। बापक परिवारक कोन कथा गामहुँमे हुनक बड़ धाख। यदि केओ विख्या अनलक तथा कोनो कनेदानीकेँ ओ पसिन्न वा जुगलत नहि जानि पड़लनि तँ गामक कोन कथा, दलान परसँ परिछनिक पश्चात् वा ओठंगर कुटाए बिना विवाहक आपस कए देल जाइत छलाह। एहन फिराओल आँखिमे काजर, कपारमे चानन तथा पहुँची पर कंगन बन्हने कतेको भाग्यावान वर वा दुलहाकेँ हम देखि चुकल छी।

आब यथा लोकमे नव प्रकाश अएलैक अछि तेना-तेना बेटी-बेच्चा तथा कनेदानी शब्द सुनबामे नहि अबैछ। बहु-विवाहकारी बिकौआ सेहो गेलाह। कनेदानीक बेटा भगिनमान कहल जाए बला मात्रिकमे परजीवी भेनिहार भलमानुसक सन्तान लोकनिक प्रायः आब अभाव सन भेल अछि। चतुर्थीक नेओत-पुरी अथवा राजपूत लोकनि जकाँ भतखइक वा सौजन्य वा स्वजनताक प्रतीक स्वरूप सिद्धान्न भोजनक व्यवहार लुप्तप्राय अछि। चतुर्थीक पश्चात विवाहसँ कोनो अयुग्म शुभ दिनमे मासाभ्यन्तर जमाइक बिदाइक व्यवस्था लुप्त भेल। विवाह कए प्रथम-प्रथम गाम अएलापर चुमाओन करएबाक व्यवहार गेल। आब तँ साधारणतया जे बहु जल्दी जमाएकेँ बिदा छोटका डाला लए करत से कोजागराक एकाध दिन पूर्व करत। एकर फल ई होइत छैक जे विदाइ तथा कोजागरा दुहू अवसरक भार एकहि वेर देल जाइत छैक। यदि विवाहमे पहिने दू वा चारिटा व्यक्ति बरिआती अबैत छलाह, तकरा बदला आइ सए दू-सए धरि

सेहो बरिआती अबैत छथि। हँ, बरिआती लोकनि पहिने दुइ टाका सोहाग दए भोरे-भोरे अपन बाट धरैत छलाह, तकर बदला ओ जतेक दामक धोतीक अपेक्षा करताह ततबा सोहागमे टाका देथिन्ह। कतए पहिने अनोन तरकारी सहित सोहारी वा चूड़ा खाथि वा स्वयं अपनहि हाथे भानस कए कन्यागतक ओहिठाम भोजन करथि, कतए आब पेआजु-लहसुन देल दालि, तरकारी तथा बाँटीक छागरक वा दोकानसँ आनल हलाली मांस तथा माछ जे कन्यागत खाए नहि देलक तकरा गारि पढ़ैत रातिमे निद्रामग्न होइत छथि। आब द्विरागमनक बरिआतीक प्रथा गेल। आब द्विरागमन मात्र बिदागरी रहि गेल अछि।

आब जे व्यवहार चलल अछि अर्हणाक रूपमे कन्यागतक स्वेच्छया देल वस्त्रादि नहि; प्रत्युत नगद रुपैआ। पहिने ई टाका "सैकड़ा" मे छलैक, तखन ई हजारमे "व्यवस्था" होअए लागल; आब ई दश हजारक गुणनफलमे लागू भए रहल अछि। विवाह की भेल, वरक खरीद-बिक्री। तेँ हमर एक परिचित एम०एल०ए०क कन्यादान यथासंभव टाका देला पर निश्चय भेल। वर-वरिआतीक सभा वा वरहट्टासँ बिदाह वरक दाम-कामक चुकती भेलहु पर होएबोमे देरी देखि बेचारे कन्यागत धैर्यहीन भए बजलाह-कृपया बरबड़द हमरा जिम्मा शीघ्र करू। किनलाहा वरकेँ कनेको दोसरक अधिकार अहाँलोकनिकेँ नहि अछि। एहिपर वरक पिताकेँ ततेक ने तामस भेलनि जे लेल वरक दामकेँ आपस कए विवाह नामञ्जूर कए देल। हमरा ईहो स्मरण अछि जे वैवाहिक कथामे कन्या पक्षक कहब जे सिद्धान्तक एक-एक टाका दुनू पक्ष देअए तथा वर पक्षक विचार जे दुनू टाका कन्यागते देथि से छल। एक टाकाक बात छलैक, होइत छल जे कोनो एक पक्ष अपन जिद्द छोड़त तथा सभाक बात छलैक; राति बिताइओ सिद्धांत लिखबए कन्यापक्ष बला वरकेँ लेबए अओताह। ताहि भरसँ हमरा सहित बरिआती लोकनि कन्यागतक गाम दिससँ अबैत प्रत्येक लालटेमक ज्योति दिसि टकटकी लगौने भरि राति बैसले रहलाह। वर लेबए केअओ नहि आएल।

नवका व्यवस्थासँ एक अप्रत्याशित लाभ ई भेल जे देल काटरक टाका डुबि जएबाक भयसँ केओ वरकेँ फिराए नहि दैछ। हँ, ई बात दोसर छैक जे इच्छानुरूप मांस-माछ भोजन नहि भेटने वा नाच गान, मलाल, झाड़-फनुसमे खर्चा नहि कएला पर कन्यागतकेँ अपमानित कएल जाइत छनि। एक हालक वार्ता थिक। एहिना पच्चीस हजारक अन्दाज टाका लए अपना बेटाक विवाहक इच्छुक एक धनिक व्यक्ति कन्यागतकेँ विवाहसँ पूर्व कन्या देखएबाक आदेश दलथिन तथापि ई कहि जे देखाओलि कन्या ओ नहि छलीह जकरासँ विवाह निश्चित छल, बरिआती सभ आपस आबए लगलाह काटरक टाका बिना आपस कएने। कन्यागत सेहो सङोर कएलक। बरिआती लोकनिक स्वागत तकर पश्चात् गारि मारिसँ तथा भोजन अभोज्य जीव बेङकेँ थारी-थारी कुदाएकेँ करओलकनि मारिक डरसँ की करैत जएताह, अगत्या वरक विवाह भेल।

टाका काटर हजारक हजार गनिए जे कन्यागत चएन रहताह से नहि। अपनो वा श्वशुरक जहल जएबाक संभावनाक डरसँ ई गछबो नहि केओ करताह जे याचित वर-मूल्य दए विवाह ठीक कएने छथि-आब जहिआसँ नवका दहेज कानून लागू भेल अछि तहिआसँ प्रायः अधिक विवाह "आदर्श" भेल कहल जाइछ। यद्यपि हमरा ईहो सुनल

अछि जे एक सज्जनक कन्यादानमे लक्षाधिक टाका खर्च भेल, यद्यपि हुनका देखौआ 5-6 बीघा मात्र खेत छनि।

महाभारतमे सेहो एकठाम काटर वा मूल्य लए वर-कन्याक विवाहक चर्चा भेल छैक। भीष्मक उक्ति छैनि-

यो मनुष्यः स्वकं पुत्रं विक्रीय धनमिच्छति।

कन्यां बा जीवितार्था यय: शुल्कं संप्रयच्छति।।

सप्तावरे महाघोरे निरये वालसा ह्वये।

स्वेदं मूत्रं पुरीषं च तस्मिन् मूढ़: समश्नुते।।

अर्थात् बेटा वा बेटीक विक्रयसँ वा टाका लए विवाहार्थ कन्या प्रदानसँ लोककेँ नरकगामी होबए पड़ैत छैक। यत: एक संग कन्याक विवाह तथा बेटाक बिक्रीक निषेध अछि, तकर साहचर्यात अर्थ भेल कन्याक बिक्री तथा बेटाक विवाहमे टाका लेबाक निषेध।

ऊपर चर्चित दुइटा धरि गाए-बड़दे लए जे कन्याक ग्रहणक धर्मशास्त्रीय व्यवस्था अछि तकर स्पष्ट खंडन आगाँक पंक्तिसँ होइछ।

आर्षे गोमिथुनं शुल्कं केचिदाहुर्मृषैव तत्।

अल्पो वा बहु एतद् विक्रयस्तावदेव हि।

यद्यप्याचरित: कैश्चिन्नैष धर्म: सनातन:।।

एहना हालत पर प्रतिदिन एकबारमे पढ़ैत छी जे यौतुक नहि भेटला पर अमुक कन्याकेँ मोक्ष (तलाक) देल गेल, अमुक कन्याक वर तथा हुनक पिता द्वारा हत्या कएल गेल वा ओ कन्या स्वयं आत्महत्या कएल। अथवा एक घटना हमरा जानल अछि जाहिमे कन्यागतकेँ बहुत धनिक जानि आगाँ चलि सहस्र-सहस्र लाभ करबाक आशामे एक पढ़ल-लिखल समाजमे प्रतिष्ठित बरक बूढ़ पिता कन्यागतक सभ प्रकारेँ संभव बेइज्जति कएने छथि, यद्यपि जे कन्या पिता ओतेक धनिक नहि जतेक वर पक्ष बुझने छलथिन आ ओ किछु देबाक प्रतिज्ञो नहि कएने छलथिन। ततबए नहि। ई विवाह एक भूतपूर्व एम० एल० ए० नहि अपितु भूतपूर्व राज्यमंत्री जे वरक सम्बन्धी छलाह हुनक प्रस्ताव पर, कन्यागतक प्रस्ताव पर नहि, भेल छल। दुर्भाग्यसँ कन्या पढ़बामे वरसँ नीक छलैक जे वरकेँ पसिन्द नहि। ताहि लेल विभिन्न बहाना कए कन्याक पढ़ब बन्द भेल। तोरा जानल छहु जे ई काण्ड के कएल। काटर-प्रथाक दुष्परिणामक ई कतोक कथाक संचय मात्र कएलहुँ अछि। आगाँ यदि एहि दिशि तोहर रुचि देखबहु तँ प्रत्येक घटनाक टीकाक रूपमे विस्तृत विवरण लिखबहु।

□□□